संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम् (Structural Functioal Approach)

व्यवहारवादी क्रान्ति एवं डेविड ईस्टन के व्यवस्था विष्ठलेषण उपागम् को विस्तारित करते हुए ऑमण्ड, पॉवेल, एप्टर एवं एकेस्टिन आदि विद्वानों ने संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम् पर बल दिए ।

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम् वह है, जो अध्ययन की विधियों में राजनीतिक व्यवस्था की संरचनाओं, उनके प्रकार्यों एवं व्यवस्था के विभिन्न अंगों के बीच अंत:क्रियाओ को पहचानने का प्रयत्न करता है। हम जानते हैं कि व्यस्था में संरचनाएं (structures) होती हैं और वे एक गतिष्ठील मष्ठीन की भाँति कार्य करती हैं। व्यवस्था विष्ठलेषकों की मान्यता है कि सभी व्यवस्थाएँ गत्यात्मकता, अन्तर्निर्भरता, विष्ठेषीकरण, चेतना केन्द्र एवं कार्यक्षमता की की विष्ठेषताएँ लेकर चलती हैं। एक मष्ठीन की भाँति उनमें कुछ डाला जाता है जिसे 'इनपुट' (Inputs) कहा जाता है। ये 'इनपुट- (Inputs) एक प्रक्रिया से निकलकर 'आउटपुट' (Outputs)में बदलती हैं। आज के राजनीतिक वैज्ञानिक 'इनपुट' और 'आउटपुट' के सम्बन्ध और प्रक्रियाओं को पहचानने के लिए जो विधि अपना रहे हैं, उसमें से एक विधि 'सरंचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम्' (Structural-Functional Approach) है।

मान्यताएँ

1. आमण्ड की दष्टि में राजनीतिक ष्ठाब्द राज्य का पर्यायवाची नहीं है बल्कि एक ऐसी स्थिति है, जो सामाजिक एकीकरण की प्रक्रिया को सम्भव ही नहीं बनाती बल्कि जीवित भी रखती है।

2. सामाजिक एकीकरण को जो तत्त्व बाँघ कर रखता है वह है औचित्यपूर्ण ष्ठाक्ति (Legitimate Force)। यह औचित्यपूर्ण ष्ठाक्ति ही सम्पूर्ण व्यवस्था में तारतम्य स्थापित करती है। ऑमण्ड के ही ष्ठाब्दों में ''राजनीतिक व्यवस्था अन्त:क्रियाओं की वह व्यवस्था है, जो सभी स्वतन्त्र समाजों में पायी जाती है और जो कम या अधिक रूप में वैघ भौतिक बाघ्यता(Legitimate Physical Constraint) के प्रयोग द्वारा एकीकरण और अनुकूलन के कार्य करती है। राजनीतिक व्यवस्था समाज में तारतम्य या व्यवस्था स्थापित करने वाली अथवा परिवर्तन करने वाली वैघ व्यवस्था है। औचित्यपूर्णता ष्ठाक्ति ही वह धारा है, जो राजनीतिक व्यवस्था के इनपुटों और आउटपुटों में प्रवाहित होती रहती है और उसे एक व्यवस्था के रूप में विष्ठेष गुण प्रदान करत्री है।'

3. ऑमण्ड ने संरचनात्मक-कार्यात्मक तथा सन्तुलनात्मक दष्टिकोण में स्थायित्व और परिवर्तन दोनों पर बल दिया है।

4. ऑमण्ड का सिद्धान्त सामाजिक पद्धति की सामान्य धारणा के अमूर्त विष्ठलेषण पर आघारित है। साथ ही इसकी विवेचना भी इस ढंग से की गई है कि सामाजिक पद्धतियों अथवा उप-व्यवस्थाओं की विभिन्नताओं को समझने के लिए विष्ठिाष्ट विष्ठलेषणों का प्रयोग सम्भव हो सकता है।

5. संरचनात्मक–कार्यात्मक विलेषण की दो प्रमुख विष्ठोषतायें हैं। पहली, यह सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को एक प्रकार की स्थिर अवस्थाओं से दूसरी स्थिर अवस्थाओं की ओर ले जाता है। दूसरी, यह समाज में बहुत ही व्यापक और तीव्र परिवर्तनों की व्याख्या प्रस्तुत करता है।

आमण्ड ने संरचनात्मक प्रकार्यात्मक विष्ठलेषण प्रस्तुत करते हुए व्यवस्था को ऐसी इकाई माना है जो वातावरण को प्रभावित करती है और उससे प्रभावित भी होती है। संरचना और कार्यो की दृष्टि से आमण्ड के अनुसार एक राजनीतिक व्यवस्था में कुछ विष्ठोषताएँ उत्पन्न होती हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. व्यापकता (Comprehensiveness)
2. अन्तर्निभरता (Interdependence)
3. सीमा रेखाएँ (Boundries)
4. मुक्त व्यवस्था (Open system)
5. व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं के स्थान पर व्यक्ति की भूमिकाओं की प्रतिक्रियाएँ।

आमण्ड द्वारा प्रतिपादित संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक उपागम्

आमण्ड व्यवहारवादी है इसलिए उसकी रूचि व्यवस्थाओं के विष्ठलेषण से अधिक प्रक्रियाओं में है। इस कारण आमण्ड राजनीतिक व्यवस्था के अन्दर की संरचनाओं को उनके प्रकार्यो के द्वारा समझने का प्रयास करता है। उसने ईस्टन के समान राजनीतिक व्यवस्था की संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक व्याख्या में निम्नलिखित तीन चरण माना है–

(i) राजनीतिक व्यवस्था के निवेष्ठा,

(ii) रूपान्तरण प्रक्रिया,

(iii) राजनीतिक व्यवस्था के निर्गत।

(क) **राजनीतिक व्यवस्था के निवेष्ठा**– आमण्ड ईस्टन की भाँति निवेष्ठों में माँगों और समर्थन को स्वीकार करता है परन्तु आमण्ड ने राजनीतिक पद्धति के प्रकार्यो का अधिक संरचनात्मक विचार अपनाया है और ईस्टन से अधिक व्यापक अर्थ देते हुए माँगों का चार भागों में विभक्त किया है–

1. वस्तुओं और संवादों के वितरण सम्बन्धी माँगें।
2. व्यवहारों को नियन्त्रित करने सम्बन्धी माँगें।
3. राजनीतिक सहभागिता सम्बन्धी माँगें।
4. संचार सम्बन्धी माँगें।

इसमें पहले प्रकार की माँगों में ष्ठिाक्षा सम्बन्धी, व्यवस्था करने सम्बन्धी, वेतन बढ़ाने समबन्धी तथा अन्य सुविधाओं सम्बन्धी माँगे होती हैं। दूसरे प्रकार की माँगों का सम्बन्ध सार्वजनिक व्यवहार नियन्त्रित करने के लिए सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं से होता है। तीसरे प्रकार की माँगों का सम्बन्ध मतदान या अन्य प्रकार से निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित होने से होता है। चौथे प्रकार की माँगों का सम्बन्ध सूचना और जानकारी प्राप्त करने या सूचनाएँ देने से सम्बन्धित होता है।

माँगों की तरह आमण्ड समर्थनों को भी चार श्रेणियों में विभक्त करता है-

1. **द्रव्यात्मक समर्थन** (Material Supports) -इसमें 'कर देना', आर्थिक योगदान इत्यादि होता है।
2. **आज्ञाकारिता के समर्थन** (Support of Obedience) -इसमें सरकार के आदेष्ठों का पालन किया जाता है।
3. **सहभागिता समर्थन** (Participation Support)- इसमें मत देकर या अन्यों का समर्थन दिलवा कर समर्थन किया जाता है।
4. **श्रद्धात्मक समर्थन** (Deferential Support) - इसमें ष्ठासकों का सम्मान करना या राष्ट्र के प्रतीकों-राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रगान आदि को सम्मान देना होता है।

आमण्ड का मत है कि माँगों और समर्थनों के अकार्य-प्रकार्य की निर्णायक राजनीतिक संस्कष्ति होती है तथा लोगों की अभिव्यक्ति से इनका सम्बन्ध होता है। आमण्ड निवेष्ठों की आधारभूमि में राजनीतिक संस्कष्ति की भूमिका को विष्ठोष कर राजनीतिक समाजीकरण तथा राजनीतिक भर्ती को विष्ठोष महत्त्व देता है, क्योंकि वह विष्ठवास करता है कि माँगों की प्रकार्य एवं जनता की सक्रियता की मात्रा स्वाभाविक रूप से राजनीतिक समाजीकरण ओर राजनीतिक भर्ती पर आधारित है।

राजनीतिक समाजीकरण और राजनीतिक भर्ती का प्रत्यक्ष सम्बन्ध राजनीतिक व्यक्ति से होता है, इसका अर्थ है कि राजनीति में व्यक्तियों की सक्रियता इन्हीं से नियमित होती है। राजनीतिक व्यवस्था में माँगों और समर्थनों का सम्बन्ध व्यक्ति की राजनीतिक सक्रियता से होता है।

(ख) रूपान्तरण प्रक्रिया- आमण्ड और पावेल की मुख्य देन रूपान्तरण प्रक्रिया है। यद्यपि यह विचार मूल रूप से ईस्टन का ही है उन्होंने इसे व्यावहारिक रूप देने, विष्ठलेषणात्मक बनाने और प्रत्ययी रूप प्रदान करने के लिए इसका बहुत अधिक विस्तार करके इस प्रक्रिया का नया सूत्रीकरण किया है। उनके विचारानुसार रूपान्तरण प्रक्रिया दो भागों में बाँटी जाती है। पहले चरण में माँगों को ऐसा मुद्दा बनाया जाता है कि वह निर्णय का विषय बन जाता है। अर्थात् मांगों को राजनीतिक एजेण्डा पर लाया जाता है। दूसरे चरण में ऐसी निर्णय योग्य बनायी हुई माँगों पर निर्णय लिया जाता है। माँगों के संसाधन और रूपान्तरण को आमण्ड ने दो भागों में विभक्त करके दो प्रकार्यात्मकता प्रवर्गो यथा राजनीतिक प्रवर्ण और सरकारी प्रवर्ग में बाँटा है। प्रथम प्रवर्ग में माँगों को संसाधित करके रूपान्तरण के योग्य बनाया जाता है। इसमें सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं। दूसरे प्रवर्ग में माँगों को आधिकारिक निर्णयों की स्थिति तक

पहुँचाने में ष्ठासन संरचनाएँ भाग लेती हैं। यहां हम राजनीतिक तथा ष्ठासनिक स्तरों पर रूपान्तरण प्रक्रिया का विवेचन करेंगे डालेंगे।

राजनीतिक स्तर पर रूपान्तरण प्रक्रिया- आमण्ड और पावेल ने राजनीतिक स्तर पर रूपान्तरण प्रक्रिया में तीन प्रकार्यात्मक प्रवर्गो को मुख्य माना है जो निम्न प्रकार है-

(i) **हित उच्चारण या स्वरूपीकरण** (Intrest Articulation)- हित स्वरूपीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति और समूह अपनी माँगों को सरकार एवं राजनीतिक पद्धति के ध्यान देने योग्य बनाने के लिए आरम्भिक रूप प्रदान करके सत्ताधारियों को अपने उद्देष्ठय के अनुरूप सम्बोधित करते हैं। यह माँग का प्रथम चरण है। इसमें माँगों के रूप, माँगोंकी ष्ठार्ते, प्रस्तुत करने की रीति अथवा उनके रूपान्तरण को दूसरे चरण में पहुँचाने के माध्यम पर निर्णय लिये जाते हैं।

(ii) **हित समूहीकरण** (Interest Aggregation) - आमण्ड ने यह माना है कि हित समूहीकरण सही अर्थो में निर्णय के लिए या रूपान्तरण के लिए माँगों के संयुक्तीकरण के माध्यम से अनेक विकल्प प्रस्तुत करना है। हित समूहीकरण के अभिकरणों में राजनीतिक दल, दबाव समूहों, हित समूह आदि संगठन आते हैं। ये संस्थाएँ जनता के हित को समूहीकष्त करने का कार्य करती है तथा उन्हें ठोस रूप प्रदान करती हैं।

(iii) **राजनीतिक सम्प्रेषण या संचार** (Political Communication) - राजनीतिक सम्प्रेषण या संचार प्रत्येक प्रकार की राजनीतिक अन्त:क्रिया में होता है। आमण्ड और पावेल का मत है कि संचार सम्बन्धी तीन तत्त्व प्रभावी ढंग से रूपान्तरण प्रक्रिया को निरूपित करते हैं-

1. संचार की संरचनाओं की उपस्थिति या उनका अभाव,
2. सूचना की मात्रा जो संचार साधनों में से गुजरती है,
3. संचार की संस्थाओं की स्वतन्त्रता या उसका अभाव।

आमण्ड पाँच प्रकार की संचार संस्थाओं को रूपान्तरण प्रक्रिया में संबन्द्ध मानता है- 1.अनौपचारिक, प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत सम्पर्क जो कि अन्य संरचनाओं से अलग व स्वतन्त्र रूप से संचालित होते हैं। 2.परम्परागत सामाजिक संरचनाएँ : जैसे-परिवार। 3. राजनीतिक निर्गतों से सम्बन्धित संरचनाएँ, जैसे- व्यवस्थापिका। 4. राजनीतिक निवेष्ठाों से सम्बन्धित संरचनाएँ, जैसे-राजनीतिक दल। 5. जनसम्पर्क और जनसंचार माध्यम : जैसे-रेडियो, समाचार-पत्र, मंच, सिनेमा आदि।

संचार की संरचनाओं से ही रूपान्तरण प्रक्रिया के लिए माँगें और समर्थन राजनीतिक व्यवस्था में आते हैं और इन्हीं के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक रूपान्तरण द्वारा निर्गतों के रूप में पहुँचते हैं। तत्पष्ठचात् उन्हीं के माध्यम से वह पुन: पर्यावरण में पहुँच जाते हैं। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था में उपर्युक्त तीनों स्तरों पर इनका विष्ठोष महत्त्व रहता है। संचार संरचनाओं का प्रभाव राजनीतिक रूपान्तरण के

साथ ष्ठासकीय रूपान्तरण के स्तर पर भी पड़ता है। इसनसे निवेष्ठा और निर्गत आपस में जुड़ते हैं। डेविड ईस्टन जहाँ प्रतिसम्भरण की बात कहता हे जिसमें वह निर्गत से निवेष्ठा की ओर होता है वहाँ आमण्ड ईस्टन से आगे जाकर कहता है कि संचार निवेष्ठाों से रूपान्तरण की ओर या निर्गतों से निवेष्ठाों की ओर न होकर समपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था की रूपान्तरण प्रक्रिया में व्याप्त रहता है। इसी के द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के विभिन्न संरचनात्मक भाग अन्त:क्रिया करते हैं और राजनीतिक व्यवस्था तथा पर्यावरण में सम्बन्ध स्थापित होता है।

ष्ठासकीय स्तर पर रूपान्तरण प्रक्रिया- ष्ठासकीय स्तर पर रूपान्तरण प्रक्रिया में तीन प्रकार्यात्मक प्रवर्गो को सरकार की तीन परम्परागत कार्यो के अनुरूप सम्पन्न किए जाते हैं जो निम्नलिखित हैं-

(i) नियम निर्माण (व्यवस्थापन कार्य),

(ii) नियम प्रयुक्ति (कार्यापालिकीय कार्य),

(iii) नियम अधिनिर्णय (न्यायपालिकीय कार्य),

ष्ठासकीय स्तर के रूपान्तरण वैधता की परिधि में सम्पन्न होते हैं। इनमें औपचारिकता और विधिकता की अधिकता के कारण इनका रूपान्तरण राजनीतिक स्तर के रूपान्तरण से बहुत अलग नहीं हो सकता। इनमें भी राजनीतिक रूपान्तरण प्रक्रिया के समान क्रम या एक निष्ठिचत प्रक्रिया की प्रधानता पायी जाती है। नियम निर्माण के बाद ही नियम-प्रयुक्ति और नियम-अधिनिर्णय की स्थिति आती है।

(ग) राजनीतिक पद्धति के निर्गत -आमण्ड और पावेल के विचारानुसार निर्गत राजनीतिक पद्धति द्वारा लिये गये निर्णयों को कहा जाता है। उन्होंने निर्गतों को चार भागों में बाँटा है-

1. निकासीय निर्गत (Extractive outputs)
2. विनियामक निर्गत (Regulative outputs)
3. वितरणात्मक निर्गत (Distributive outputs)
4. प्रतीकात्मक निर्गत (Symbolic outputs)

निर्गत में पहली श्रेणी में कर वसूली, व्यक्तिगत सेवाएँ तथा राजनीतिक योगदान सम्मिलित होते हैं। दूसरे में मानव व्यवहार को नियन्त्रित करना, तीसरे में सरकारी सेवाएँ, वस्तुओं एवं लाभों का आबंटन और चौथे में नीति की घोषणाएँ जिनके माध्यम से मान्य मूल्यों की पुष्टि की जाती है, सम्मिलित है। आमण्ड एवं पावेल की राजनीतिक पद्धति की संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक व्याख्या में निवेष्ठा, रूपान्तर स्तर एवं निर्गतों को समझने के लिए आगे दिया हुआ चित्र सहायक हो सकता है-

आमण्ड का संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम् का प्रतिमान

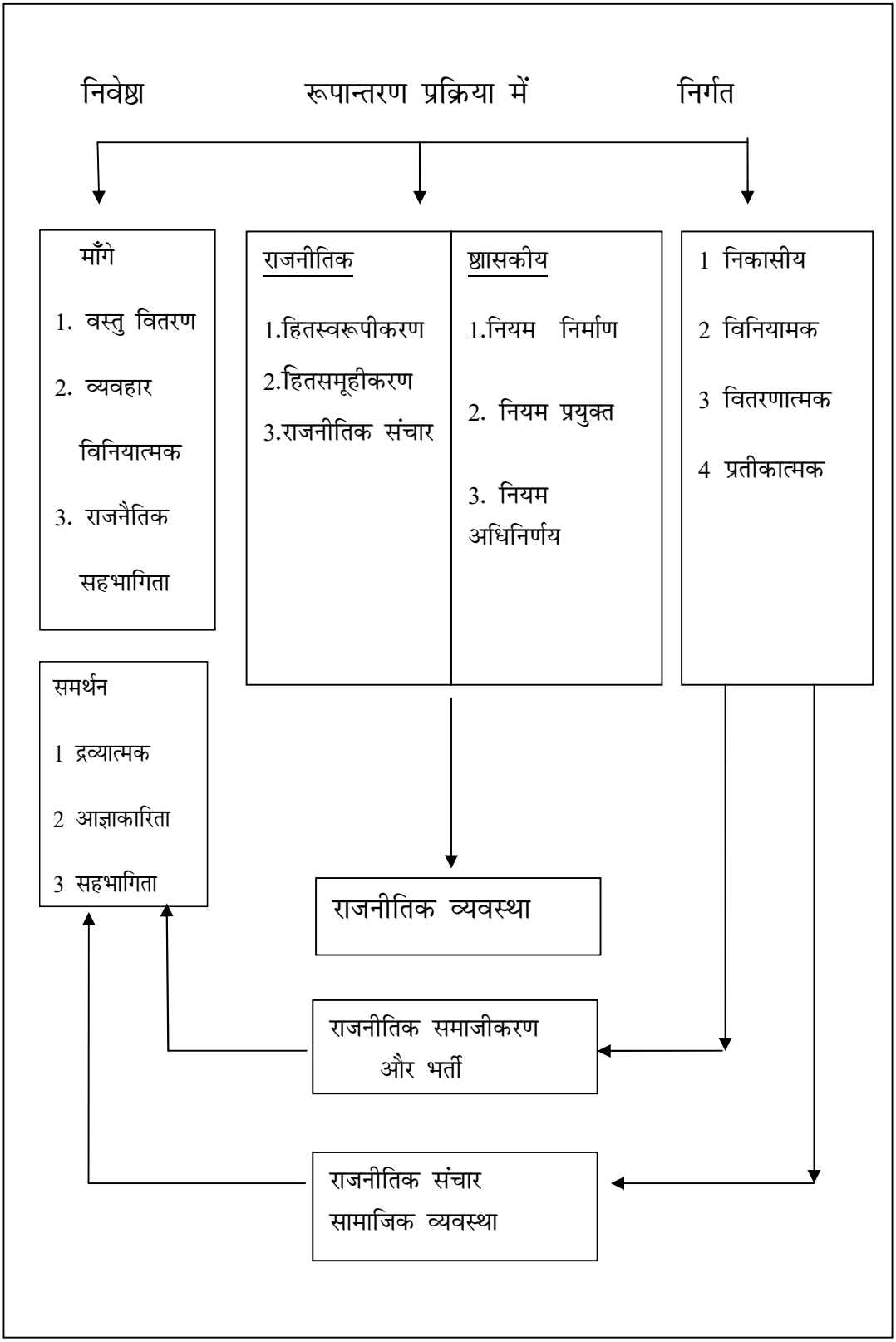

निष्कर्ष

यद्यपि आज संरचनात्मक-कार्यात्मक विष्ठलेषण, सामाजिक अन्तर्सम्बन्धों के अध्ययन का प्रमुख दष्टिकोण बन चुका है। फिर भी आलोचकों का तर्क है कि आमण्ड का यह उपागम रूढ़िवादी और परिवर्तन विरोधी है क्योंकि वह वर्त्तमान राजनीतिक व्यवस्था के निरीक्षण पर ही बल देती है, इसमें भविष्य के लिए कोई परिप्रेक्ष्य नहीं है। इस उपागम में यह तो बताया गया है कि एक संरचना में परिवर्तन आने से इसकी सम्पूर्ण व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु इस प्रकार के परिवर्तनों से अन्यत्र आने वाले परिवर्तनों और प्रभावों की मात्रा, तीव्रता और प्रकष्ति का ज्ञान प्राप्त करने का कोई साधन नहीं बताया है। जो भी आलोचना की जाय वास्तविकता तो यह है कि आमण्ड का यह उपागम् ऐसी समग्रवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करता है जिससे राजनीतिक व्यवस्था के सभी पहलुओं से सम्बन्धित स्पष्टीकारण या प्राकल्पनाएँ निकाली जा सकती हैं। यह उपागम राजनीतिक व्यवस्थाओं के सामान्य सिद्धान्त के अन्ततः निर्माण की सम्भावनाएँ प्रस्तुत करता है।